17-8-71

नशे में सदैव रहते हैं। आप की दी हुई युक्ति में ही हम तत्पर हैं। तो बाबा समझेंगे खुशी बजी है। चिट्ठी ही नहीं लिखेंगे तो समझेंगे बिमार है। याद में ही नहीं रहते हैं। शायद बिमार है। नहीं तो बाबा को समाचार देना है। बाबा हमने यह यह सर्विस की। इनको समझाया। इनकी बुधि में पूरा नहीं बैठा। तो फिर यह भी समझावेंगे इस रीति समझाओ। कई तो चिट्ठी ही नहीं लिखते। तो बाबा एकदम फाँ कर देता है। बच्चों ने गीत तो सुना। जिन्होंने गीत बनाया है वह इस गीत का अर्थ नहीं जानते हैं। तो उनकी बाकी क्या गति होगी। बाप को जानने से भारत सदगति को पाता है। बाप को न जानने कारण भारत बिल्कुल दुर्गति को पा लिया है। अब बाप तुम बच्चों को समझाते हैं+ हम तुमको सदगति में ले जाऊँगा। बाकी सब को मुक्ति में ले जाऊँगा। भारत जीवनमुक्ति में है तो बाकी सब मुक्ति में है। यह चेंज सिवाय बाप के और कोई कर नहीं सकता। सर्व का गति सदगति दाता एक ही बाप है। सर्व की सदगति होती है जरूर कल्प कल्प संगम पर होगी। तुम जानते हो हम आत्माओं का रूहानी बाबा वह एक है। उनको आत्मा ही याद करती है। तुमको भक्ति मार्ग में दो बाप है। सतयुग में एक बाप है। संगम पर है तीन बाप। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो बाप ठहरा ना। शिव भी बाबा है। वह है सबका बाप। उनसे वर्सा लेना है। उनको याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। कोई न कोई पाप हो जावेगा। इसलिये उनका फोटो भी न रखो। शिव बाबा को याद करो। हम उनके बच्चे बने हैं। यह है सच्चा पैयल ज्ञान। रूहानी बाप का रूहानी बच्चों प्रति। बाकी सब देहअभिमानी हैं। देहअभिमानी पतित मनुष्य जो कर्तव्य करते वह पतित ही करते। दान पुण्य आदि जो भी करते हैं वह सब पतित ही बनाते हैं। रावणराज्य में यह होता ही है। अब बाप आकर आर्डीनेन्स निकालते हैं। कहते हैं बच्चे खबरदार। विकार में नहीं जाना है। काम पर विजय पानी है। तूफान आदि तो बहुत आवेंगे। इस पर फाँ न होना चाहिए। माया के इतने विकल्प आवेंगे जो अज्ञान काल में भी नहीं आवेंगे। ऐसे भी विकल्प आते हैं। कहते हैं भक्तिमार्ग में तो बड़ी खुशी रहती है। अभी आप को याद करने चाहते हैं तो कर नहीं सकते। कि दी याद ही नहीं पड़ती बड़ी चीज हो तो याद करें। बाबा कहते हैं तुम शिव बाबा कह याद करो। इस पुरानी दुनिया को भूल जाओ तुम शान्तिधाम से यहाँ आये हो पार्ट बजाने। तो उनको याद करो। अन्त मते सो गति हो जावेगी। मुझे शान्तिधाम में याद करो। सिर्फ शान्तिधाम को याद नहीं करना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। आत्मा का स्नीट परमात्मा से लव चाहिए। आधा कल्प का लवर है। आत्मा कहती है बाबा कमाल है। हम आधा कल्प आप को भूल गये हैं। यहाँ ब्राह्मणियाँ जिनको ले आती है, बहुत खबरदारी से निश्चय बुधि को ही लाना है। अगर यहाँ आकर फिर कोई जाकर पतित बना तो दण्ड ब्राह्मणी पर भी आ जावेगी। इसलिये ब्राह्मणी पर बहुत रिसपान्सीबुलिटी है। आजकल दुनिया में गंदगी बहुत है। टीचर पढ़ाने वाले भी बहुत गंदे होते हैं। बाबा ने यह सब लिया है सब बातों का अनुभवी है। यहाँ तो गंद की बात ही नहीं। आपस में हंसना= हंसना, खेलना बात चित करना इसकी कोई मना नहीं। परन्तु अगर थोड़ा भी प्यार करेंगे तो फिर जास्ती बढ़ता जावेगा। इसलिये इनसे भी पार जाना है। कहाँ देखते हैं हंगामा होता है तो अपने को बचाने लिये युक्ति रचनी है। नंगन न होना है। घर में बैठे हो या सतसंग में बैठे हो? (घर में) बाप बच्चों को घर में पढ़ाते हैं। तुम सब का यह घर है। जब बाहर जाते हो तो ऐसे नहीं रहेंगे। यहाँ पक्का अडूट मनसा रहेगा। देहका अभिमान छोड़ना है। देहीअभिमानी बनो। जात-पात का भेद सब निकल जावेगा। पुरानी दुनिया तमोप्रधान है। उनमें भेद भाव और ही बढ़ता जाता है। आगे ब्रिटीश गवर्मेन्ट के समय भाषाओं की खिटपिट नहीं थी। अब दिन प्रति दिन फूट पड़ती जाती है। बुधि तमोप्रधान होती जाती है। समझ की बात है। अच्छा मात पिता बापदादा का मीठे मीठे रूहानी बच्चों प्रति याद प्यार गुडमार्निंग। ओमशान्ति।